एक कुत्ता और एक मैना

–हज़ारी प्रसाद द्विवेदी

लेखक परिचय

जीवन परिचय–हिंदी साहित्य के जाने-माने आलोचक एवं निबंधकार हजारी प्रसाद द्विवेदी का जन्म उत्तर प्रदेश के बलिया जिले के 'आरत दूबे के छपरा' नामक गाँव में सन् 1907 में हुआ था। इनके पिता का नाम अनमोल दूबे तथा माता का नाम श्रीमती ज्योति कली था। इंटर की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद वे उच्च शिक्षा हेतु बनारस चले गए। वहाँ इन्होंने काशी हिंदू विश्वविद्यालय से ज्योतिष शास्त्र तथा साहित्य में आचार्य की उपाधि हासिल की। इसके उपरांत वे शांतिनिकेतन में अध्यापन कार्य करने लगे। रवींद्रनाथ टैगोर के सानिध्य में आकर उन्होंने लेखन कार्य शुरू कर दिया। वे काशी हिंदू विश्वविद्यालय, पंजाब विश्वविद्यालय, शांतिनिकेतन आदि में हिंदी विभाग के प्रमुख रहे। उनका देहावसान सन् 1979 में हो गया।

रचना परिचय–बहुमुखी प्रतिभा के धनी द्विवेदी जी की रचनाएँ निम्नलिखित हैं–

निबंध–अशोक के फूल, कुटज, विचार प्रवाह, विचार और वितर्क, कल्पलता, आलोक पर्व आदि।

उपन्यास–बाणभट्ट की आत्मकथा, चारु चंद्रलेखा, पुनर्नवा तथा अनामदास का पोथा।

आलोचना–हिंदी साहित्य की भूमिका, सूर साहित्य, हिंदी साहित्य का आदि काल, सूरदास और उनका काव्य, कबीर, हमारी साहित्यिक समस्याएँ, साहित्य का मर्म, भारतीय वाङ्मय, साहित्य सहचार आदि।

साहित्यिक विशेषताएँ–द्विवेदी जी ने अनेक विधाओं पर अपनी लेखनी चलाई है। उनके निबंधों में सरसता, गंभीरता, विनोदप्रियता तथा विद्वता के दर्शन होते हैं। वे छोटे-छोटे वाक्यों में गंभीर बातें कह जाते हैं। ललित निबंधों के मामले में वे बेजोड़ हैं। हिंदी को भारत में लोकप्रिय बनाने में उनका योगदान अविस्मरणीय है।

भाषा-शैली–द्विवेदी जी हिंदी तथा संस्कृत के प्रकांड विद्वान थे। अपनी रचनाओं में उन्होंने तत्सम शब्दावली के साथ-साथ उर्दू-फ़ारसी, अंग्रेज़ी और देशज शब्दों का प्रयोग किया है। उनकी भाषा सरल तथा बोधगम्य है। मुहावरों के प्रयोग से भाषा में सरसता तथा रोचकता आ गई है।

पाठ का सारांश

प्रस्तुत पाठ 'एक कुत्ता और एक मैना' में पशु-पक्षियों के प्रति मानवीय प्रेम का प्रदर्शन है तथा साथ ही पशु-पक्षियों से मिलने वाले प्रेम, भक्ति, विनोद और करुणा जैसे मानवीय भावों का विस्तार भी है। इसमें गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर की कविताओं और उनकी यादों के सहारे रवींद्रनाथ की संवेदनशील आंतरिक विराटता और सहजता का चित्रण किया गया है। यह निबंध सभी जीवों से प्रेम करने की प्रेरणा देता है।

आज से कई वर्ष पहले गुरुदेव ने शांतिनिकेतन छोड़कर अन्यत्र रहने का विचार बनाया। शायद उनका स्वास्थ्य अच्छा नहीं था। उन्होंने तय किया कि वे श्रीनिकेतन के पुराने तिमंजिले मकान में कुछ दिन रहें। उसमें लोहे की घुमावदार सीढ़ियाँ होने के कारण उन्हें तीसरी मंजिल पर बड़ी कठिनाई से ले जाया गया। कमजोर शरीर वाले रवींद्रनाथ टैगोर के लिए वहाँ जाना संभव न था।

छुट्टियों के दिन लोगों के बाहर चले जाने के कारण लेखक ने सपरिवार गुरुदेव के दर्शन का निश्चय किया। लेखक जब उनके पास पहुँचा तो उस समय वे अकेले तथा प्रसन्नचित्त थे तथा कुर्सी पर बैठे अस्त होते सूर्य को देख रहे थे। उन्होंने लेखक से कुशल-क्षेम के प्रश्न पूछे। उसी समय उनका कुत्ता उनके पास आकर पूँछ हिलाने लगा। गुरुदेव ने उसकी पीठ पर हाथ फेरा। वह आनंदित हो उठा। इन्हें कैसे पता कि मैं यहाँ हूँ। वह बिना किसी के बताए दो मील चलकर यहाँ आ गया। इसी कुत्ते को लक्ष्यकर गुरुदेव ने आरोग्य पत्रिका में एक कविता लिखी थी, जिसमें उसकी स्वामिभक्ति का वर्णन है। कविता का भाव यह है कि प्रतिदिन वह भक्त कुत्ता आसन के पास स्तब्ध होकर तब तक बैठा रहता था जब तक अपने हाथों के स्पर्श से इसका संग नहीं स्वीकारता। इतने मात्र से ही उसके अंग-अंग में आनंद का प्रवाह बह उठता है। यही वह एकमात्र जीव है जो अच्छा-बुरा सबको भेदकर संपूर्ण मनुष्य को देख सकता है।

लेखक कहता है कि जब भी वह उस कविता को पढ़ता है तो तितल्ले की वह घटना उसकी आँखों के सामने प्रत्यक्ष रूप ले लेती है। उस दिन की वह सामान्य-सी घटना आज विश्व की अनेक महिमाशाली घटनाओं में बैठ गई। जब गुरुदेव का चिताभस्म कलकत्ते (कोलकाता) से आश्रम लाया गया तब भी वह कुत्ता अन्य आश्रमवासियों के साथ शांत भाव से उत्तरायण तक गया और चिताभस्म के कलश के पास कुछ देर तक बैठा रहा।

कुछ और पहले की एक घटना है। गुरुदेव बगीचे में फूल-पत्तों को अत्यंत ध्यान से देखते हुए टहल रहे थे। लेखक भी साथ था। वे एक महाशय से बातें भी करते जा रहे थे कि गुरुदेव ने उनसे अचानक पूछा कि सारे कौए कहाँ चले गए? एक की भी आवाज नहीं सुनाई दे रही है। इस बात की खबर न लेखक को थी और न उन महाशय को। लेखक उनको सर्वव्यापी पक्षी समझता था। उस दिन ज्ञात हुआ कि ये पक्षी भी प्रवास को चले जाते हैं। उसके एक सप्ताह बाद बहुत से कौए दिखाई दिए।

दूसरी बार एक सुबह जब लेखक गुरुदेव के पास था, उस समय वहाँ एक लँगड़ी मैना फुदक रही थी। गुरुदेव ने कहा यह यूथभ्रष्ट है जो यही आकर रोज फुदकती है। गुरुदेव को उसकी लँगड़ाहट में एक करुण भाव दिखाई देता है। यदि इस करुणभाव की बात गुरुदेव न करते तो लेखक उस करुण भाव को न देख पाता। लेखक समझता था कि मैना करुण भाव दिखाने वाला पक्षी है ही नहीं। वह तो दूसरों पर ही अनुकंपा दिखाती है। इसका कारण यह था कि लेखक के कमरे में एक मैना दंपत्ति ने घोंसला बना लिया था। लेखक ने उनकी गतिविधियाँ देख रखी थीं।

मैना इस तरह कभी करुण हो सकती है, लेखक ने सोचा भी न था। गुरुदेव की बात पर लेखक ने ध्यान से देखा तो उसके मुख पर करुणभाव था। शायद वह विधुर मैना था जो स्वयंवर-सभा के युद्ध में परास्त हो गया था या विधवा मैना थी जो पति को खोकर एकांत विहार कर रही थी। इसकी ऐसी करुण दशा को लक्ष्यकर गुरुदेव ने बाद में एक कविता लिखी। उस कविता में उन्होंने मैना की उस दशा पर चिंता व्यक्त की है जिसके कारण वह अपने दल से अलग रह रही है। वह प्रतिदिन संगीहीन होकर कीड़ों का शिकार करती है तथा बरामदे में नाच-कूदकर चहलकदमी करती है। वह लेखक से निडर हो गई है। वह सोचता है कि समाज के किस निर्वसन पर उसे यह दंड मिला है। कुछ ही दूरी पर कुछ मैनाएँ शिरीष के वृक्ष पर बकझक कर रही हैं पर यह सबसे अलग सहज मन से आहार चुगती हुई झड़े पत्तों पर कूदती फिर रही है। इसकी चाल में वैराग्य का भाव भी नहीं हैं। इस कविता को जब लेखक पढ़ता है तो उस मैना की करुण मूर्ति उसकी आँखों के सामने घूम जाती है। लेखक की आँखें उस मैना तक नहीं पहुँच सकीं पर गुरुदेव की दृष्टि उसके मर्मस्थल तक पहुँच गई। एक दिन वह मैना उड़ गई। उसका गायब होना भी कितना करुणाजनक है।

शब्दार्थ

पृष्ठ संख्या 79

अन्यत्र–कहीं और। **तिमंजिले**–तीन मंजिल वाले। **तल्ला**–मंजिल (Floor)। **क्षीणवपु**–दुबला-पतला, कमजोर शरीर। **दर्शनीय**–देखने योग्य। **दर्शनार्थी**–दर्शन चाहनेवाले। **अतिथि**–आगंतुक, आनेवाले। **पुस्तकीय**–पुस्तक से संबंधित। **प्रगल्भ**–बोलने में संकोच न करने वाला, प्रतिभाशाली।

पृष्ठ संख्या 80

परवाह–फिक्र, चिंता। **भीत-भीत**–डरे-डरे, दूर-दूर। **मय**–सहित। **अस्तगामी**–डूबता हुआ। **ध्यानस्तिमित**–ध्यानपूर्वक। **स्नेह रस**–प्यार के रस में। **परितृप्ति**–संतुष्टि। **स्नेहदाता**–प्यार करने वाला। **आरोग्य**–बांग्ला भाषा की एक पत्रिका का नाम। **स्तब्ध**–चुप। **वाक्यहीन**–बोलने में असमर्थ। **प्राणिलोक**–संसार। **अहैतुक**–अकारण, बिना कारण के। **चैतन्य**–चेतना युक्त। **मूक**–चुप। **प्राणपण**–जान की बाज़ी।

पृष्ठ संख्या 81

सृष्टि–संसार। **मर्मभेदी**–दिल को छू जाने वाली। **आत्मनिवेदन**–प्रार्थना। **मूर्तिमान**–स्थिर। **महिमाशाली**–यशस्वी। **चिताभस्म**–चिता की राख। **अन्यान्य**–दूसरा। **उत्तरायण**–शांतिनिकेतन में उत्तर दिशा की ओर बना रवींद्रनाथ टैगोर का एक निवास-स्थल। **धृष्ट**–मुँहजोर, डीठ, जबरदस्ती बातें करने वाला।

पृष्ठ संख्या 82

सर्वव्यापक–हर जगह पाए जाने वाला। **प्रवास**–परदेश जाकर रहना। **बाध्य**–विवश। **यूथभ्रष्ट**–समूह या झुंड से बहिष्कृत किया हुआ। **अनुकंपा**–कृपा, दया। **समाधान**–हल, उपाय। **अंबार**–ढेर। **परों**–पंखों। **विजयोद्‌घोषी वाणी**–जीत की खुशी में निकलने वाली आवाज। **गान**–गाना।

पृष्ठ संख्या 83

मुखरित–सवाक् होना। **मुखातिब**–मुँह की ओर। **अदा**–अंदाज, तरीका। **रिमार्क**–टिप्पणी। **प्राइवेट**–व्यक्तिगत। **अक्ल**–बुद्‌धि। **विधुर**–जिसकी पत्नी मर गई हो। **आहत**–घायल। **परास्त**–हारा हुआ। **ईषत**–आंशिक रूप से। **एकांत विहार**–अकेले में घूमना। **संगीहीन**–साथी के बिना। **निर्वसन**–अलग करना।

पृष्ठ संख्या 84

अभियोग–दोष, आरोप। **मर्मस्थल**–हृदय। **संध्यातारा**–साँझ को दिखाई देने वाला तारा।

मुहावरे

विजयोद्‌घोष करना–जीत की खुशी में नारे लगाना। **बकझक करना**–गप्पें लड़ाना। **मन में गाँठ पड़ना**–मन में कोई बात बैठी होना।

अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न

① आज से कई वर्ष पहले गुरुदेव के मन में आया कि शांतिनिकेतन को छोड़कर कहीं अन्यत्र जाएँ। स्वास्थ्य बहुत अच्छा नहीं था। शायद इसलिए, या पता नहीं क्यों, तै पाया कि वे श्रीनिकेतन के पुराने तिमंज़िले मकान में कुछ दिन रहें। शायद मौज में आकर ही उन्होंने यह निर्णय किया हो। वे सबसे ऊपर के तल्ले में रहने लगे। उन दिनों ऊपर तक पहुँचने के लिए लोहे की चक्करदार सीढ़ियाँ थीं, और वृद्‌ध और क्षीणवपु रवींद्रनाथ के लिए उस पर चढ़ सकना असंभव था। *(पृष्ठ 79)*

प्रश्न

(*i*) 'गुरुदेव' का पूरा नाम क्या था?

(क) बाबा जय गुरुदेव — (ख) रवींद्रनाथ टैगोर
(ग) हजारी प्रसाद द्‌विवेदी — (घ) इनमें से कोई नहीं

(*ii*) गुरुदेव शांतिनिकेतन छोड़कर कहाँ रहने लगे?

(क) आनंद निकेतन — (ख) आदित्य निकेतन
(ग) बिरला निकेतन — (घ) श्री निकेतन

(*iii*) गुरुदेव मकान के किस तल पर रहने लगे?

(क) भूतल पर | (ख) प्रथम तल पर

(ग) तृतीय तल पर | (घ) दुवितीय तल पर

(*iv*) गुरुदेव की शारीरिक दशा उस समय कैसी थी?

(क) वे बिल्कुल स्वस्थ थे | (ख) वे बिस्तर पर लेटे रहते थे

(ग) वे बहुत ही कमजोर हो चुके थे | (घ) इनमें से कोई नहीं

(*v*) 'क्षीणवपु' का पर्याय है ....

(क) स्वस्थ शरीर वाला | (ख) ठिगना कद

(ग) उत्तम स्वास्थ्य वाला | (घ) दुबला पतला शरीर

उत्तर

(*i*) (ख) रवींद्रनाथ टैगोर

(*ii*) (घ) श्रीनिकेतन

(*iii*) (ग) तृतीय तल पर

(*iv*) (ग) वे बहुत ही कमजोर हो चुके थे

(*v*) (घ) दुबला-पतला शरीर

② गुरुदेव वहाँ बड़े आनंद में थे। अकेले रहते थे। भीड़-भाड़ उतनी नहीं होती थी, जितनी शांतिनिकेतन में। जब हम लोग ऊपर गए तो गुरुदेव बाहर एक कुर्सी पर चुपचाप बैठ अस्तगामी सूर्य की ओर ध्यान-स्तिमित नयनों से देख रहे थे। हम लोगों को देखकर मुस्कराए, बच्चों से ज़रा छेड़छाड़ की, कुशल-प्रश्न पूछे और फिर चुप हो रहे। ठीक उसी समय उनका कुत्ता धीरे-धीरे ऊपर आया और उनके पैरों के पास खड़ा होकर पूँछ हिलाने लगा। गुरुदेव ने उसकी पीठ पर हाथ फेरा।

(पृष्ठ 80)

प्रश्न

(*i*) गुरुदेव कहाँ आनंद में रह रहे थे? निम्नलिखित में से बताइए।

(क) शांतिनिकेतन | (ख) श्री निकेतन

(ग) हरिनिकेतन | (घ) आनंद निकेतन

(*ii*) गुरुदेव वहाँ आनंद में क्यों थे?

(क) वहाँ उनसे मिलने जुलने वाले ज्यादा आते थे | (ख) वहाँ अधिक उपहार मिल जाता था

(ग) वहाँ लोगों के कम आने से शांति थी | (घ) वहाँ उनका कुत्ता नहीं था

(*iii*) 'हम लोग ऊपर गए'—यहाँ हम लोग कौन हैं?

(क) हजारी प्रसाद सपरिवार | (ख) श्यामाचरण दुबे सपरिवार

(ग) प्रेमचंद सपरिवार | (घ) हरिशंकर परसाई सपरिवार

(*iv*) लेखक जब वहाँ पहुँचा उस समय सूरज ....।

(क) निकलने वाला था | (ख) सिर पर चढ़ आया था

(ग) छिपने वाला था | (घ) आग बरसा रहा था

(*v*) 'नयन' शब्द का पर्यायवाची निम्नलिखित में से कौन-सा नहीं है?

(क) चक्षु | (ख) दृग

(ग) लोचन | (घ) वदन।

उत्तर

(*i*) (ख) श्री निकेतन
(*ii*) (ग) वहाँ लोगों के कम आने से शांति थी
(*iii*) (क) हजारी प्रसाद सपरिवार
(*iv*) (ग) छिपने वाला था
(*v*) (घ) वदन

③ हम लोग उस कुत्ते के आनंद को देखने लगे। किसी ने उसे राह नहीं दिखाई थी, न उसे यह बताया था कि उसके स्नेह-दाता यहाँ से दो मील दूर हैं और फिर भी वह पहुँच गया। इसी कुत्ते को लक्ष्य करके उन्होंने 'आरोग्य' में इस भाव की एक कविता लिखी थी–'प्रतिदिन प्रातःकाल यह भक्त कुत्ता स्तब्ध होकर आसन के पास तक तब तक बैठा रहता है, जब तक अपने हाथों के स्पर्श से मैं इसका संग नहीं स्वीकार करता। इतनी-सी स्वीकृति पाकर ही उसके अंग-अंग में आनंद का प्रवाह बह उठता है। *(पृष्ठ 80)*

प्रश्न

(*i*) **निम्नलिखित में से किसे राह नहीं दिखाई गई थी?**
(क) लेखक को
(ख) कुत्ते को
(ग) गुरुदेव को
(घ) मैना को

(*ii*) **यहाँ 'स्नेहदाता' किसे कहा गया है?**
(क) रवींद्रनाथ टैगोर को
(ख) हजारी प्रसाद द्विवेदी को
(ग) सालिम अली को
(घ) प्रेमचंद को

(*iii*) **'आरोग्य' निम्नलिखित में से क्या है?**
(क) एक स्वास्थ्य संबंधी पत्रिका
(ख) स्वस्थ रहने की आयुर्वेदिक दवा
(ग) उपहार में मिली एक पुस्तक
(घ) गुरुदेव की एक कृति

(*iv*) **कुत्ता गुरुदेव के पास क्यों बैठा रहता था?**
(क) भोजन पाने के लिए
(ख) स्नेह पाने के लिए
(ग) सर्दी से बचने के लिए
(घ) शिकारियों से बचने के लिए

(*v*) **'स्वीकृति' शब्द .... है।**
(क) जातिवाचक संज्ञा
(ख) व्यक्तिवाचक संज्ञा
(ग) विशेषण
(घ) भाववाचक संज्ञा

उत्तर

(*i*) (ख) कुत्ते को
(*ii*) (क) रवींद्रनाथ टैगोर को
(*iii*) (घ) गुरुदेव की एक कृति
(*iv*) (ख) स्नेह पाने के लिए
(*v*) (घ) भाववाचक संज्ञा।

④ कुछ और पहले की घटना याद आ रही है। उन दिनों शांतिनिकेतन में नया ही आया था। गुरुदेव से अभी उतना धृष्ट नहीं हो पाया था। गुरुदेव उन दिनों सुबह अपने बगीचे में टहलने के लिए निकला करते थे। मैं एक दिन उनके साथ हो गया था। मेरे साथ एक और पुराने अध्यापक थे और सही बात तो यह है कि उन्होंने ही मुझे भी अपने साथ ले लिया था। गुरुदेव एक-एक फूल-पत्ते को ध्यान से देखते हुए अपने बगीचे में टहल रहे थे और उक्त अध्यापक महाशय से बातें करते जा रहे थे। *(पृष्ठ 81-82)*

प्रश्न

(*i*) लेखक को जब कौओं की घटना याद आ रही थी तब वह कहाँ था?

(क) श्री निकेतन में (ख) आनंद निकेतन में

(ग) शांतिनिकेतन में (घ) हरिनिकेतन में

(*ii*) लेखक गुरुदेव से उतना धृष्ट क्यों नहीं हो पाया था?

(क) गुरुदेव उसकी बात का बुरा मान जाते थे

(ख) गुरुदेव किसी से बात नहीं करते थे

(ग) गुरुदेव ने किसी से भी बात करने को मना कर रखा था

(घ) लेखक वहाँ नया-नया था

(*iii*) गुरुदेव सुबह कौन-सा काम किया करते थे?

(क) कुत्ते को स्नेह देते थे (ख) पक्षियों को दवा देते थे

(ग) बगीचे में भ्रमण करते थे (घ) आंगतुकों से मिलते थे।

(*iv*) गुरुदेव का फूल-पत्ते को ध्यान से देखना क्या प्रकट करता है?

(क) वे पौधों के विशेषज्ञ थे (ख) वे वहाँ भौंरों को देख रहे थे

(ग) वे फूलों के विशेषज्ञ थे (घ) वे प्रकृति प्रेमी थे

(*v*) 'गुरुदेव एक-एक फूल-पत्ते को ध्यान से देख रहे थे'—वाक्य में 'ध्यान से' शब्द किस प्रकार का शब्द है? (व्याकरणिक दृष्टि से)

(क) संज्ञा (ख) क्रियाविशेषण

(ग) विशेषण (घ) क्रिया

उत्तर

(*i*) (ग) शांतिनिकेतन में

(*ii*) (घ) लेखक वहाँ नया-नया था

(*iii*) (ग) बगीचे में भ्रमण करते थे

(*iv*) (घ) वे प्रकृति प्रेमी थे

(*v*) (ख) क्रियाविशेषण।

5 कुछ ही दूरी पर और मैनाएँ बक-झक कर रही हैं, घास पर उछल-कूद रही हैं, उड़ती फिरती हैं शिरीषवृक्ष की शाखाओं पर। इस बेचारी को ऐसा कुछ भी शौक नहीं है। इसके जीवन में कहाँ गाँठ पड़ी है, यही सोच रहा हूँ। सवेरे की धूप में मानो सहज मन से आहार चुगती हुई झड़े हुए पत्तों पर कूदती फिरती है सारा दिन। किसी के ऊपर इसका कुछ अभियोग है, यह बात बिलकुल नहीं जान पड़ती। इसकी चाल में वैराग्य का गर्व भी तो नहीं हैं, दो आग-सी जलती आँखें भी तो नहीं दिखतीं।" *(पृष्ठ 84)*

प्रश्न

(*i*) 'इस बेचारी को ऐसा कुछ भी शौक नहीं है' में बेचारी किसे कहा गया है?

(क) लँगड़ाकर चलने वाली मैना को

(ख) झुंड में उछलती-कूदती किसी मैना का

(ग) लेखक के घर में घोंसला बनाने वाली गौरैया को

(घ) इनमें से कोई नहीं।

(*ii*) अन्य मैना पक्षी कहाँ हैं?

(क) पीपल के पेड़ पर (ख) शीशम के पेड़ पर

(ग) आम के पेड़ पर (घ) शिरीष के पेड़ पर

(*iii*) दूसरी मैना के संबंध में कौन-सा कथन असत्य है?

(क) इसे कोई शौक नहीं है (ख) वह अनमने मन से आहार चुगती है

(ग) वह गर्व भाव से घूमती है (घ) वह सूखे पत्तों पर कूदती-फिरती है

(*iv*) लेखक ने समूह से अलग फिरने वाली मैना को किस भाव से देखा?

(क) सौंदर्य भाव से (ख) प्रशंसा के भाव से

(ग) स्नेह भाव से (घ) करुण भाव से

(*v*) 'वैराग्य' शब्द से बना विशेषण शब्द इनमें से कौन-सा है?

(क) राग (ख) बैरागी

(ग) विराग (घ) विराट।

उत्तर

(*i*) (क) लँगड़ाकर चलने वाली मैना को **(*ii*)** (घ) शिरीष के पेड़ पर

(*iii*) (ग) वह गर्वभाव से घूमती है **(*iv*)** (घ) करुण भाव से

(*v*) (ख) बैरागी

प्रश्न-अभ्यास

(पाठ्यपुस्तक से)

1. गुरुदेव ने शांतिनिकेतन को छोड़ कहीं और रहने का मन क्यों बनाया?

उत्तर गुरुदेव ने शांतिनिकेतन को छोड़कर अन्यत्र रहने का मन इसलिए बनाया क्योंकि–

(*i*) वे कुछ दिनों से अस्वस्थ चल रहे थे।

(*ii*) वे असमय मिलने-जुलने आने वालों से परेशान थे।

(*iii*) वे आराम, शांति और एकांत की आवश्यकता महसूस कर रहे थे।

2. मूक प्राणी मनुष्य से कम संवेदनशील नहीं होते। पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर मूक प्राणी भी कम संवेदनशील नहीं होते हैं। यह 'एक कुत्ता और एक मैना' पाठ से कुत्ते की स्वामिभक्ति एवं व्यवहार से प्रकट होता है–

(*i*) गुरुदेव जब श्री निकेतन के तितल्ले भवन में आकर रहने लगते हैं तो उनका कुत्ता उनको खोजते-खोजते वहाँ आ जाता है। वह गुरुदेव का स्पर्श पाकर आनंद अनुभव करता है।

(*ii*) गुरुदेव की मृत्यु के उपरांत कुत्ता अस्थिकलश के पास कुछ देर तक उदास बैठा रहता है। वह भी अन्य लोगों की तरह ही शोक प्रकट करता है।

(*iii*) लँगड़ी फुदकती मैना की चाल में लेखक को एक प्रकार की करुणा दिख रही थी।

3. गुरुदेव द्वारा मैना को लक्ष्य करके लिखी कविता के मर्म को लेखक कब समझ पाया?

उत्तर गुरुदेव द्वारा मैना को लक्ष्य करके लिखी गई कविता का मर्म लेखक तब समझ पाया जब उसने गुरुदेव की लिखी इस आशय की कविता पढ़ी कि मैना कीड़ों को चुनकर गिरे पत्ते पर उछल-कूद रही है जबकि अन्य मैनाएँ शिरीषवृक्ष पर बैठी

बक-झक कर रही हैं। वे घास पर उछल-कूद कर रही हैं। यही मैना जब उड़कर कहीं चली जाती है तब लेखक ने समझा कि अन्य मैनाओं के साथ न मिलने के कारण वह उड़ गई। उसका यूँ गायब होना बहुत करुण लगा।

4. प्रस्तुत पाठ एक निबंध है। निबंध गद्य-साहित्य की उत्कृष्ट विधा है, जिसमें लेखक अपने भावों और विचारों को कलात्मक और लालित्यपूर्ण शैली में अभिव्यक्त करता है। इस निबंध में उपर्युक्त विशेषताएँ कहाँ झलकती हैं? किन्हीं चार का उल्लेख कीजिए।

उत्तर लेखक ने अपने भावों और विचारों को कलात्मक एवं लालित्यपूर्ण शैली में अभिव्यक्त किया है। इस विशेषता को निम्नलिखित स्थानों पर देखा जा सकता है–

(*i*) आश्रम के अधिकांश लोग बाहर चले गए, एक दिन हमने सपरिवार उनके 'दर्शन' की ठानी।

(*ii*) यहाँ दुख के साथ कह देना चाहता हूँ कि दर्शनार्थियों में कितने ही इतने प्रगल्भ थे कि समय-असमय, स्थान-अस्थान, अवस्था-अनवस्था की एकदम परवा नहीं करते और रोकते रहने पर भी आ ही जाते थे। ऐसे दर्शनार्थियों से गुरुदेव भीत-भीत रहते थे। अस्तु, मैं मय बाल-बच्चों के एक दिन श्री निकेतन जा पहुँचा।

(*iii*) उस समय लँगड़ी मैना फुदक रही थी। गुरुदेव ने कहा, "देखते हो, यह यूथभ्रष्ट है। रोज फुदकती है, ठीक यही आकर मुझे इसकी चाल में एक करुण भाव दिखाई देता है।"

(*iv*) पक्षियों की भाषा तो मैं नहीं जानता, पर मेरा निश्चित विश्वास है कि उनमें कुछ इस तरह की बातें हो जाया करती हैं–

पत्नी–ये लोग यहाँ कैसे आ गए जी?

पति–ऊँह बेचारे आ गए हैं, तो रह जाने दो। क्या कर लेंगे!

पत्नी–लेकिन फिर भी इनको इतना तो ख्याल होना चाहिए कि यह हमारा प्राइवेट घर है।

पति–आदमी जो हैं, इतनी अक्ल कहाँ।

5. आशय स्पष्ट कीजिए–

इस प्रकार कवि की मर्मभेदी दृष्टि ने इस भाषाहीन प्राणी की करुण दृष्टि के भीतर उस विशाल मानव-सत्य को देखा है, जो मनुष्य, मनुष्य के अंदर भी नहीं देख पाता।

उत्तर आशय–

अपने पास बैठे कुत्ते की पीठ पर गुरुदेव ने हाथ फेरा तो कुत्ते का रोम-रोम उनके स्नेह का अनुभव करने लगा। कुत्ते के पास इसे बताने के लिए वाणी नहीं है पर कवि (गुरुदेव) की दृष्टि उसके मर्म को समझ जाती है। प्रेम का अनुभव विशाल मानव-सत्य है। साधारण मनुष्य इस भावना का अनुभव नहीं कर पाते हैं। कवि की दृष्टि ने उस प्राणी के भीतर भी इसे अनुभव कर लिया।

रचना और अभिव्यक्ति

6. पशु-पक्षियों से प्रेम इस पाठ की मूल संवेदना है। अपने अनुभव के आधार पर ऐसे किसी प्रसंग से जुड़ी रोचक घटना को कलात्मक शैली में लिखिए।

उत्तर मेरे गाँव में एक किसान ने गाय पाल रखी थी। वह जी-जान से गाय की सेवा करता था। वह खाने के बाद शाम को उसे रोज एक रोटी खिलाता था। गाय भी उसका हाथ चाटकर अपना प्रेम प्रकट करती थी। सर्दियों के दिन थे। किसान की तबीयत खराब हो गई। शाम को वह बिस्तर से न उठ सका। नित्य की भाँति उसका बेटा रोटी लेकर गाय को खिलाने आया, पर गाय ने रोटी न खाई। किसान को न देखकर गाय दुखी थी। उसने चारा न खाया न रोटी। चौथे दिन जब किसान कुछ ठीक हुआ और उठकर गाय के पास आया तो गाय बड़ी देर तक उसे देखती रही। उसकी आँखों में आँसू थे। शाम को उसने किसान के हाथ से रोटी खाई। धीरे-धीरे गाय ने खाना-पीना शुरू कर दिया। लोगों ने यह देख कहना शुरू कर दिया कि जरूर इन दोनों का पूर्वजन्म में रिश्ता रहा होगा।

भाषा–अध्ययन

7. • गुरुदेव ज़रा मुस्करा दिए।
 • मैं जब यह कविता पढ़ता हूँ।

 ऊपर दिए गए वाक्यों में एक वाक्य में अकर्मक क्रिया है और दूसरे में सकर्मक। इस पाठ को ध्यान से पढ़कर सकर्मक और अकर्मक क्रिया वाले चार-चार वाक्य छाँटिए।

उत्तर पाठ से सकर्मक और अकर्मक क्रिया वाले चार-चार वाक्य–

सकर्मक क्रिया वाले वाक्य–

(*i*) हम लोग उस कुत्ते के आनंद को देखने लगे।
(*ii*) गुरुदेव ने इस भाव की एक कविता लिखी थी।
(*iii*) बच्चों से जरा छेड़छाड़ की, कुशल क्षेम पूछे।
(*iv*) इतनी सी स्वीकृति पाकर ही उसके अंग-अंग में आनंद का प्रवाह बह उठता है।

अकर्मक क्रिया वाले वाक्य–

(*i*) दूसरी बार मैं सवेरे गुरुदेव के पास उपस्थित था।
(*ii*) उस समय एक लँगड़ी मैना फुदक रही थी।
(*iii*) हम लोगों को देखकर मुस्कराए।
(*iv*) ऐसे दर्शनार्थियों से गुरुदेव कुछ भीत-भीत से रहते थे।

8. **निम्नलिखित वाक्यों में कर्म के आधार पर क्रिया-भेद बताइए–**

(क) मीना कहानी सुनाती है।
(ख) अभिनव सो रहा है।
(ग) गाय घास खाती है।
(घ) मोहन ने भाई को गेंद दी।
(ङ) लड़कियाँ रोने लगीं।

उत्तर

वाक्य	**क्रिया भेद**
(क) मीना कहानी सुनाती है।	सकर्मक क्रिया
(ख) अभिनव सो रहा है।	अकर्मक क्रिया
(ग) गाय घास खाती है।	सकर्मक क्रिया
(घ) मोहन ने भाई को गेंद दी।	सकर्मक क्रिया
(ङ) लड़कियाँ रोने लगीं।	अकर्मक क्रिया

9. **नीचे पाठ में से शब्द-युग्मों के कुछ उदाहरण दिए गए हैं; जैसे–**

 समय-असमय, अवस्था-अनवस्था

 इन शब्दों में 'अ' उपसर्ग लगाकर नया शब्द बनाया गया है।

 पाठ में से कुछ शब्द चुनिए और उसमें 'अ' एवं 'अन्' उपसर्ग लगाकर नए शब्द बनाइए।

उत्तर **'अ'** उपसर्ग लगाने से बने शब्द–

निर्णय	अनिर्णय	मूल्य	अमूल्य
चल	अचल	कारण	अकारण
भद्र	अभद्र	परिचय	अपरिचय

हिंदी	अहिंदी	प्रगल्भ	अप्रगल्भ
पुस्तकीय	अपुस्तकीय	कुशल	अकुशल
प्रचलित	अप्रचलित	स्वीकार	अस्वीकार
स्वीकृति	अस्वीकृति	चैतन्य	अचैतन्य
सहज	असहज	विश्वास	अविश्वास
करुण	अकरुण	निश्चित	अनिश्चित
प्रत्यक्ष	अप्रत्यक्ष	भाव	अभाव
शांत	अशांत	नियमित	अनियमित

'अन्' उपसर्ग युक्त शब्द–

अवस्था	अनावस्था	उपस्थित	अनुपस्थित
उपयोग	अनुपयोग	उद्देश्य	अनुद्देश्य

कुछ और प्रश्न

I. उच्च चिंतन एवं मनन क्षमताओं का आँकलन संबंधी प्रश्नोत्तर

1. श्री निकेतन में ऐसा कौन सा आकर्षण था, जिसके कारण गुरुदेव ने वहाँ रहने का मन बनाया?

उत्तर गुरुदेव ने शांति निकेतन छोड़ने का फैसला इसलिए किया क्योंकि उनका स्वास्थ्य खराब था। वे आराम करना चाहते थे। शांति निकेतन में उनसे मिलने वाले बहुत लोग आया करते थे। निकेतन में एकांत का आकर्षण था, जिसके कारण गुरुदेव ने वहाँ रहने का मन बनाया।

2. 'एक कुत्ता एक मैना' पाठ के आधार पर गुरुदेव की विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर 'एक कुत्ता एक मैना' पाठ के आधार पर गुरुदेव की निम्नलिखित विशेषताएँ पता चलती हैं–

(क) गुरुदेव पशु-पक्षियों से अत्यधिक प्रेम करते थे। उनका कुत्ता सदैव उनके साथ ही रहता था।

(ख) वे संवदेनशील व्यक्ति थे। वे प्रकृति से घनिष्ठ लगाव रखते थे।

(ग) वे सहृदय कवि थे, जिन्होंने लँगड़ी मैना पर मर्मस्पर्शी कविता लिखी थी।

(घ) गुरुदेव हास्य प्रिय व्यक्ति थे। यह उनके दर्शनार्थी प्रसंग से ज्ञात होता है।

3. गुरुदेव ने लँगड़ी मैना को देख क्या कल्पना की थी? 'एक कुत्ता एक मैना' पाठ के आधार पर अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर गुरुदेव लँगड़ी मैना को देख कहने लगे कि या तो यह नर मैना विधुर पति है जो पिछली स्वयंवर सभा के युद्ध में आहत और परास्त हो गया था अथवा यह मादा मैना वह विधवा पत्नी है जिसका पति विडाल के आक्रमण में मारा गया और यह तबसे एकांतवास करते हुए जीवन बिता रही है।

4. गुरुदेव किस तरह के दर्शनार्थियों से भीत-भीत रहते थे?

उत्तर गुरुदेव से मिलने आने वालों में कुछ ऐसे थे जो असमय आ जाया करते थे। उनकी अधिकांश बातें निरर्थक हुआ करती थीं। वे गुरुदेव के पास आते हुए समय-असमय, स्थान आदि की तनिक भी चिंता नहीं करते थे। वे मना करने पर भी अंदर आ जाते थे। गुरुदेव का स्वास्थ्य अच्छा नहीं था, इसलिए वे ऐसे दर्शनार्थियों से भीत-भीत रहते थे।

5. गुरुदेव मनुष्यों के साथ ही नहीं वरन् पशुओं से भी आत्मीयता रखते थे-पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर लेखक जब गुरुदेव से मिलने गया था, उसी समय उनका कुत्ता उनको ढूँढ़ता हुआ वहाँ आ गया। वह गुरुदेव के पैरों के पास खड़ा होकर पूँछ हिलाने लगा। गुरुदेव ने उसकी पीठ पर हाथ फेरा। वह आँखें बंद किए हुए अपने रोम-रोम से उस स्नेह-रस का अनुभव करने लगा। इससे पता लगता है, गुरुदेव पशुओं से भी आत्मीयता रखते थे।

6. मैना को देखते समय गुरुदेव और लेखक की दृष्टि में क्या अंतर था?

उत्तर मैना को देखते समय गुरुदेव और लेखक की दृष्टि में यह अंतर था कि लेखक को मैना की चाल में छिपा करुण भाव नहीं दिख रहा था। वह तो यही समझता था कि मैना अनुकंपा दिखाने वाली पक्षी है, जबकि गुरुदेव को मैना का करुण भाव दिख रहा था। वह उसे यूथभ्रष्ट समझते थे।

II. लघु उत्तरीय प्रश्न

1. गुरुदेव ने जब शांतिनिकेतन को छोड़कर अन्यत्र रहने का मन बनाया उस समय उसकी शारीरिक दशा कैसी थी?

उत्तर गुरुदेव ने जब शांतिनिकेतन को छोड़कर अन्यत्र रहने का मन बनाया उस समय उनका स्वास्थ्य अच्छा न था। वे वृद्‌ध और क्षीणवपु हो चुके थे। दूसरी-तीसरी मंजिल तक सीढ़ियाँ चढ़ पाना उनके लिए संभव न था। उनको ऊपर ले जाने में बड़ी कठिनाई होती थी।

2. गुरुदेव का कुत्ता उनसे विशेष लगाव रखता था, इसे प्रमाणित करने वाली घटना का उल्लेख कीजिए।

उत्तर गुरुदेव का कुत्ता उनसे विशेष लगाव रखता था—यह इस घटना से प्रमाणित होता है कि वह कुत्ता भी अन्यान्य लोगों के साथ शांतभाव से उत्तरायण तक गया और चिताभस्म के कलश के पास थोड़ी देर तक चुपचाप बैठा भी रहा।

3. लँगड़ी मैना के बारे में गहराई से विचार करने पर लेखक ने उसके बारे में क्या अनुमान लगाया?

उत्तर गुरुदेव की बात पर गहराई से विचार करने पर लेखक ने महसूस किया कि सचमुच ही लँगड़ी मैना के मुँह पर एक करुण भाव है। उसने अनुमान लगाया कि शायद वह विधुर है जो पिछली बार स्वयंवर सभा के युद्‌ध में आहत और परास्त हो गया था, या विधवा पत्नी है जो पिछले बिडाल के आक्रमण के समय पति को खोकर एकांत विहार कर रही है।

4. गुरुदेव ने एकांत विहार करने वाली मैना तथा अन्य मैनाओं के बारे में क्या लिखा है?

उत्तर गुरुदेव ने लिखा है कि वह मैना जो एकांत विहार कर रही है, एक पैर से लँगड़ा रही है। वह अपने दल से अलग होकर कीड़ों का शिकार करती है तथा पेड़ के गिरे पत्तों पर फुदकती है। इसके विपरीत कुछ ही दूरी पर अन्य मैनाएँ शिरीष के वृक्ष की शाखाओं पर बकझक कर रही हैं। वे हरी घास पर उछल-कूद कर रही हैं तथा प्रसन्नचित्त हैं।

III. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. 'एक कुत्ता तथा एक मैना' पाठ से आपको क्या शिक्षा मिलती है?

उत्तर 'एक कुत्ता और एक मैना' पाठ से हमें यह शिक्षा मिलती है कि हमें मनुष्यों के अलावा पशु-पक्षियों के प्रति भी संवेदनशील होना चाहिए। उनसे प्रेम तथा अपनत्व का भाव रखना चाहिए। हमें ईश्वर की अन्य कृतियों, अपने पर्यावरण के मित्र इन पशु-पक्षियों के प्रति भी गहरी रुचि रखना चाहिए। उन्हें मनुष्य की दृष्टि से नहीं बल्कि उनकी या प्रकृति के दृष्टिकोण से उन्हें देखना चाहिए। हमें उनके सुख-दुख का भी ध्यान रखना चाहिए। हमें उनके साथ प्रेमपूर्वक व्यवहार करते हुए इन निरीह प्राणियों को अपना बना लेना चाहिए।

2. 'एक कुत्ता और एक मैना' पाठ का प्रतिपाद्‌य अपने शब्दों में लिखिए?

उत्तर एक कुत्ता और एक मैना पाठ में लेखक ने पशु-पक्षियों के प्रति मानवीय प्रेम का प्रदर्शन किया है। उसने इन निरीह प्राणियों से मिलनेवाले प्रेम, भक्ति, करुणा तथा विनोद जैसे मानवीय भावों का उल्लेख किया है। लेखक ने कुत्ते और मैना के माध्यम से मानवीय और संवेदनशील जीवन का बहुत सूक्ष्म और गहनता से निरीक्षण किया है तथा हमें इन प्राणियों से प्यार करने का संदेश दिया है। लेखक ने बताया है कि गुरुदेव ने 'कुत्ते' और 'मैना' जैसे पशु-पक्षियों को भी अपनी कविता का वर्ण्यविषय बनाया है तथा यह बताने का प्रयास किया है कि पशु हो या पक्षी, उनमें भी हमारी ही तरह भावनाएँ और संवेदनाएँ हैं। वे भी हमारी ही तरह दुख-सुख का अनुभव करते हैं।

3. 'पशुओं में भी संवेदनशीलता होती है'–एक कुत्ता और एक मैना नामक पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर 'एक कुत्ता और एक मैना' नामक पाठ में लेखक ने गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर के एक कुत्ते के माध्यम से स्पष्ट किया है कि पशुओं में भी संवेदनशीलता होती है। वे भी मनुष्यों जैसे ही संवेदनशील प्राणी हैं। यह अलग बात है कि वाणीहीन इन प्राणियों को हमारी भाषा में संवेदना व्यक्त करना नहीं आता है और जिस प्रकार वे संवेदना व्यक्त करते हैं उसे देखने और समझने की अंतदृष्टि या मर्मभेदी दृष्टि हमारे पास नहीं है। पाठ के अनुसार जब गुरुदेव श्री निकेतन में आकर रहने लगते हैं तो उनका कुत्ता उन्हें खोजता हुआ वहाँ भी पहुँच जाता है। गुरुदेव का स्पर्श पाकर उसका रोम-रोम आनंद-रस में डूब जाता है गुरुदेव की मृत्यु के बाद अस्थिकलश ले जाते हुए अन्य लोगों के साथ उसका उत्तरायण तक जाना, अस्थिकलश के पास कुछ देर तक शांत होकर चुपचाप बैठना आदि देखकर यह स्पष्ट हो जाता है कि पशुओं में भी संवेदनशीलता होती है।

4. गुरुदेव द्वारा लिखी गई कविता पढ़कर मैना के बारे में लेखक की सोच में क्या बदलाव आया? पाठ के आधार पर लिखिए।

उत्तर लेखक जिस मकान में रहता था, उस मकान के निर्माताओं ने दीवार में चारों ओर एक-एक सूराख छोड़ रखी थी। उन्हीं सूराखों में आकर एक मैना दंपति नियमित रूप से प्रतिवर्ष अपनी गृहस्थी बसा लिया करते थे। वे उसमें प्रसन्न होकर नाचते और मधुर तथा विजयोद्घोष वाणी में गान किया करते थे। यह सब देखकर लेखक को लगता था कि मैना करुण भाव दिखाने वाली पक्षी हो ही नहीं सकता है। जब उसने गुरुदेव द्वारा लँगड़ी मैना पर लिखी कविता पढ़ी और उस पर गहराई से विचार किया तो उसे ध्यान आया कि सचमुच ही उस मैना के मुँह पर करुण भाव है। इस प्रकार गुरुदेव की कविता पढ़कर मैना की करुण दशा के बारे में लेखक की सोच में बदलाव आया।

रचनात्मक मूल्यांकन

क्रियाकलाप 1. कुत्तों के विषय में सूचनाओं का संकलन, लेखन एवं प्रस्तुतीकरण।

उद्देश्य–
- जानवरों के प्रति प्रेम उत्पन्न करना।
- लेखन क्षमता का विकास करना।

प्रक्रिया–
- इस कार्य को चार्ट-पेपर पर किया जाए।
- सबसे ऊपर कुत्ते का चित्र बनाएँ या चिपकाएँ।
- उसके नीचे ये जानकारियाँ लिखीं जाएँ–
- कुत्ते की नस्ल का नाम ....
- कुत्ते का रूप-रंग, आकार ....
- कुत्ते का पसंदीदा भोजन ....
- कुत्ते की आदतें, गुण, स्वामिभक्ति आदि ....

मूल्यांकन के आधार बिंदु– प्रत्येक जानकारी हेतु – 1 अंक
प्रस्तुतीकरण कौशल हेतु – 1 अंक

क्रियाकलाप 2. किसी पशु-पक्षी से हुई बातचीत का संवाद-लेखन एवं नाटकीकरण।

उद्देश्य–
- पशु-पक्षियों के प्रति संवेदनशीलता को बढ़ावा देना।
- रचनात्मक प्रवृत्ति को बढ़ावा देना।
- अभिनय क्षमता में वृद्धि करना।

प्रक्रिया–

- छात्रों को आठ-दस के समूह में बाँटकर किसी पशु-पक्षी से हुई काल्पनिक बातचीत का संवाद-लेखन करने के लिए प्रेरित करना।
- इस संवाद का नाटकीकरण कर कक्षा में प्रस्तुत करें।

मूल्यांकन के आधार बिंदु–

विषय-वस्तु का चयन एवं रूपांतरण	–	2 अंक
संवाद अदायगी	–	1 अंक
अभिनय कौशल	–	1 अंक
समग्र प्रभाव	–	1 अंक